संस्कृति विभाग, उ.प्र.

संग्रहालय : ज्ञान का वातायन

संग्रहालय भवन

राजकीय बौद्ध संग्रहालय
गोरखपुर

राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोररखपुर

स्थिति एवं इतिहास

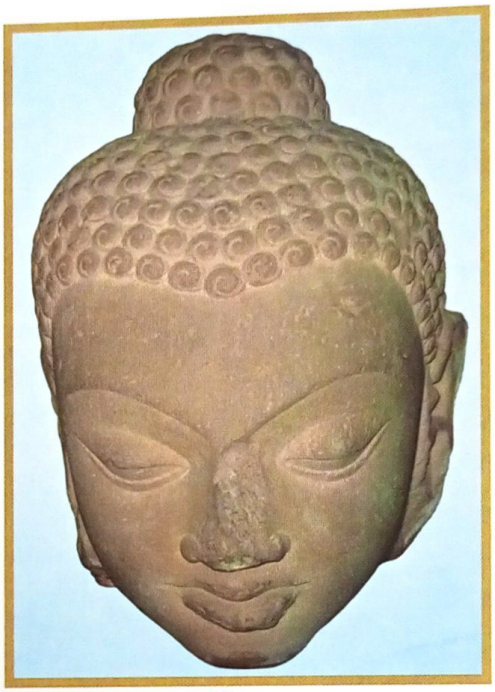

बुद्ध शीर्ष, गुप्तकाल

गोरखपुर 26°46′ उत्तरी अक्षांश एवं 83°22′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है, जहाँ रेल, सड़क तथा वायु मार्ग द्वारा सुगमतापूर्वक पहुँचा जा सकता है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 280 कि.मी. पूर्व, वाराणसी से लगभग 230 कि.मी. उत्तर राष्ट्रीय राजमार्ग सं.–28 पर स्थित गोरखपुर पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय तथा कुशीनगर, कपिलवस्तु एवं नेपाल पहुंचने का मुख्य केन्द्र बिन्दु है।

बीसवीं सदी में गोरखपुर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था, जो वर्तमान में प्रमुख व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुका है। इसे एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) की स्थापना की गयी है।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

मौर्य, शुंग, कुषाण एवं गुप्त साम्राज्य का अभिन्न अंग तथा बौद्ध धर्म के उद्‌भव और विकास का हृदय स्थल गोरखपुर पूर्वी उ.प्र. का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित स्थान कपिलवस्तु (पिपरहवा), देवदह, कोलियों का रामग्राम, कोपिया एवं तथागत की महापरिनिर्वाणस्थली कुशीनगर इसके महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। गुरु गोरक्षनाथ की तपोभूमि गोरखपुर से भगवान बुद्ध का गृह नगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपरहवा) एवं महापरिनिर्वाणस्थली कुशीनगर क्रमशः 100 कि.मी. पश्चिमोत्तर तथा 52 कि.मी. पूरब में स्थित है। मध्ययुगीन संत, समाज सुधारक एवं हिन्दू–मुस्लिम एकता के पोषक संत कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से लगभग 25 कि.मी. पश्चिम में स्थित है। नगर क्षेत्र में गोरक्षनाथ मन्दिर, गीता–वाटिका, विष्णु–मन्दिर, गीता प्रेस, अम्बेडकर पार्क, मुंशी प्रेमचन्द पार्क, तारामण्डल, नौका विहार, चिड़ियाघर तथा रेल संग्रहालय आदि प्रमुख स्थल भी दर्शनीय हैं।

संग्रहालय

पूर्वी क्षेत्र के यत्र–तत्र बिखरी कला सम्पदा के संग्रह, संरक्षण, अभिलेखीकरण, प्रदर्शन एवं शोध के साथ ही इस क्षेत्र के गरिमामय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व की जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग, उ.प्र. द्वारा वर्ष 1986–87 में रा॰ ीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर की स्थापना की गयी। वर्तमान में रामगढ़ताल परियोजना, गोरखपुर के अन्तर्गत निर्मित संग्रहालय भवन, गोरखपुर रेलवे व बस स्टेशन से लगभग 6 कि.मी. दक्षिण, सर्किट हाउस से लगभग 1 कि.मी. दक्षिण–पूर्व एवं तारामण्डल से लगभग 1 कि.मी. पूर्व में स्थित है।

संग्रहालय में प्रस्तर मूर्तियाँ, मृण्मूर्तियाँ, सिक्के, पाण्डुलिपियाँ, लघुचित्र थंका एवं आभूषण आदि कलाकृतियां संग्रहीत हैं, जिनमें से कतिपय चयनित कलाकृतियों को विभिन्न वीथिकाओं में जनसामान्य के अवलोकनार्थ प्रदर्शित किया गया है। बौद्ध धर्म के प्रख्यात विद्वान महापण्डित राहुल सांकृत्यायन समर्पित प्रथम वीथिका में भगवान बुद्ध के विविध स्वरूपों एवं मुद्राओं का प्रदर्शन किया गया है। वीथिका में प्रदर्शित मथुरा शैली में निर्मित गुप्तकालीन अलंकृत प्रभामण्डल युक्त बुद्ध शीर्ष से आदमकद मूर्तियों के निर्माण का स्पष्ट संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त गांधार शैली में निर्मित बोधिसत्व, बुद्ध शीर्ष, मार का आक्रमण से सम्बन्धित फलक को रोचक ढंग से प्रदर्शित किया गया है। पाल वंशीय नरेशों के काल में पूर्वांचल पुनः बौद्ध धर्म और कला के हलचल का केन्द्र बना। परिणामस्वरूप अनेक प्रकार के तान्त्रिक प्रतिमाओं और बौद्ध स्तूपों का निर्माण हुआ, जिनके नमूने भी प्रदर्शित कलाकृतियों में देखे जा सकते हैं।

धर्म और कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण पवित्र मांगलिक चिन्हों से युक्त मथुरा शैली की कुषाणकालीन अभिलिखित आयागपट्ट के अतिरिक्त जैन तीर्थंकर ऋषभनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर की प्रस्तर प्रतिमाएं भी वीथिका में प्रदर्शित हैं।

संग्रहालय–वीथिका का विहंगम दृश्य

पुरातत्व वीथिका में पाषाण कालीन हथियार एवं उपकरण, गोरखपुर क्षेत्र से प्राप्त मृण्पा मृण्मूर्तियों एवं प्राक्मौर्यकाल के मिट्टी के बने आभूषणों का प्रदर्शन रोचक ढंग से किया गया है। वीथिका में प्रदर्शित राजधानी व बनरसियाकला (महराजगंज) तथा कोपिया (संतकबीर नगर) से प्राप्त मृण्मूर्तियाँ मौर्यकाल से गुप्त काल तक का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रदर्शित मृण्मूर्तियों को देख कर हम कह सकते हैं कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्राचीन पुरास्थलों पर मृण्मूर्तियों के निर्माण की समृद्ध परम्परा थी, जो अपने समकालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के अभिज्ञान के प्रमुख स्रोत हैं। वीथिका में प्रदर्शित मृणमूर्तियों में शिशु का आहार करती डाकिनी (हारिति), मोढ़े पर बैठी पशु–सिर युक्त मातृका, शुकसारिका, पशु आकृतियाँ, बोधिसत्व, मत्स्य, जलपात्र व कुषाणकालीन मिट्टी के मूर्तियों एवं सिक्कों के सांचे विशेष रूप से दर्शनीय हैं।

उमा महेश्वर, मध्यकाल

इसके अतिरिक्त प्रस्तर मूर्तियों में अष्टभुजी नृत्य मुदा में गणेश, त्रिशूलधारी शिव, शेषशायी एवं स्थानक विष्णु, सप्तमातृका पट्ट, वाराही, नवग्रहपट्ट, कुषाणकालीन कुबेर एवं कसौटी पत्थर पर बनी पाल शैली की उमा–महेश्वर की प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र हैं।

कला के विविध आयाम वीथिका में कुषाण एवं गुप्तकालीन बुद्ध व बोधिसत्व की प्रस्तर तथा मृण की लघु आकृतियों के साथ–साथ शैव, वैष्णव तथा बौद्ध धर्म से सम्बन्धित धातु मूर्तियाँ भी प्रदर्शित हैं। इसके अतिरिक्त भगवान बुद्ध के विविध मुद्राओं के अंकन से युक्त चाँदी का लोटा, काष्ठ पर निर्मित मंजूषा, हाथी दाँत एवं शीशे से बनी कलाकृतियाँ निश्चय ही दर्शकों को आकर्षित करती हैं।

मध्ययुगीन भारतीय कला में लघुचित्रों के निर्माण की लोकप्रिय परम्परा को दृष्टिगत रखते हुए चित्रकला वीथिका में प्रदर्शित राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला के विभिन्न शैलियों का प्रतिनिधित्व करते लघुचित्र विषयवस्तु की दृष्टि से भी सम्मोहक हैं। प्रदर्शित लघुचित्रों में पंचतन्त्र की कथाओं का निरूपण करती विभासरागिनी, माखनचोर (कृष्ण–लीला), संगीत का आनन्द

लेते राधा–कृष्ण, रासलीला, महिषासुरमर्दिनी, गुरूड़ पर सवार विष्णु एवं देवताओं द्वारा दुर्गा की आराधना के दृश्य दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त तिब्बत एवं नेपाल में प्रचलित थंका भी रोचक ढंग से प्रदर्शित किया गया है।

संग्रहालय की जैन वीथिका में जैन धर्म से सम्बन्धित कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है। जैन पूजा के प्रथम सोपान आयागपट्ट मथुरा से ही प्राप्त हुए हैं। पत्थर के चौकोर टुकड़े के ऊपर शुभ चिन्हों का अंकन जैसे स्वस्तिक, श्रीवत्स मीन, पूर्णघट, माला, वर्द्धमान आदि अष्टमांगलिक चिन्हों को उकेरा गया है। कभी–कभी मध्य में 'जिन' आकृतियों का भी अंकन मिलता है। ये उस संक्रमण युग के हैं, जब प्रतीकों की उपासना प्रचलित थी और मानवाकृति में महापुरुषों की मूर्तियों का श्रीगणेश हो रहा था, जिन्हें प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व से प्रथम शताब्दी ई. के बीच का मानते हैं। कालान्तर में आयागपट्ट पर उत्कीर्ण जिन मूर्तियों का स्वतंत्र प्रतिमाओं के रूप में विकास होने लगा जिन्हें तीर्थंकर प्रतिमा कहा गया। प्रारम्भ में इन तीर्थंकर प्रतिमाओं पर कोई लांछन नहीं मिलता है। कालान्तर में गुप्तोत्तर काल से तीर्थंकर प्रतिमाओं पर लांछन बनने लगे। तीर्थंकर मूर्तियाँ प्रायः तीन आसनों में हमें प्राप्त होती हैं– पालथी मारकर ध्यान मुद्रा में, कायोत्सर्ग अर्थात खड़ी मुद्रा में एवं एक ही प्रस्तर खण्ड पर पीठ से पीठ जोड़कर खड़ी चार तीर्थंकर प्रतिमाएं जिन्हें 'सर्वतोभद्र' कहा जाता है। वीथिका में सर्वतोभद्रिका, अम्बिका, चक्रेश्वरी, युगलीया, महोबा से प्राप्त लगभग 12वीं शती ई. की चौबीसी आदि प्रदर्शित की गयी हैं। मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त लाल चित्तीदार पत्थर से निर्मित

तीर्थंकर पार्श्वनाथ, मध्यकाल

संवत 54 की लेखयुक्त सरस्वती प्रतिमा की सुन्दर अनुकृति वीथिका में प्रदर्शित की गयी है. जिसके बायें हाथ में पोथी और दायें हाथ में अक्षमाला है। अब तक की प्राप्त सरस्वती की यह सबसे प्राचीनतम प्रतिमा है।

संग्रहालय में एक सन्दर्भ पुस्तकालय भी है, जिसमें कला, इतिहास, पुरातत्व, मुद्राशास्त्र एवं प्रतिमाशास्त्र आदि से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध हैं। उच्च शिक्षा से जुड़े विद्वतजन एवं शोधार्थी समय–समय पर इसका लाभ उठाते रहते हैं।

भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति एवं पुरातत्व की जानकारी जनसामान्य को लब्ध कराने के उद्देश्य से शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत संग्रहालय द्वारा समय–समय पर विविध विषयों पर आधारित प्रदर्शनी व प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त प्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यान आदि का भी आयोजन किया जाता है।

संग्रहालय का मुख्य उद्देश्य पूर्वी क्षेत्र एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त पुरासम्पदा का संकलन, संरक्षण, प्रदर्शन, प्रकाशन तथा देशी–विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट कर उन्हें भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी उपलब्ध कराना है।

आइये! अपनी सांस्कृतिक विरासत को जानिये–पहचानिये.

संग्रहालय भ्रमण–समय

पूर्वाह्न 10.30 से अपराह्न 4.30 बजे तक

प्रवेश शुल्क

भारतीय दर्शकों हेतु	–	रु. 3/- प्रति दर्शक
विदेशी पर्यटकों हेतु	–	रु. 10/- प्रति दर्शक
कैमरा शुल्क	–	रु. 20/- प्रति कैमरा

पाँच वर्ष तक के बच्चों एवं शैक्षणिक भ्रमण पर आने वाले छात्र समूहों के लिए प्रवेश निःशुल्क

अवकाश

प्रत्येक सोमवार माह के द्वितीय शनिवार के बाद पड़ने वाला रविवार एवं अन्य सार्वजनिक अवकाश।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

उप निदेशक

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर–273017

(0551) 2230162